साहित्य अकादेमी

"जानकीवल्लभ शास्त्री जन्मशतवार्षिकी समारोह" : एक रपट

साहित्य अकादमी ने गत वर्ष एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया था कि साहित्यकारों के जन्मशतवार्षिकी समारोह उन साहित्यकारों की कर्मस्थली पर ही आयोजित किये जाएँ. इसी क्रम में 28 जुलाई 2016 को आचार्य "जानकीवल्लभ शास्त्री जन्मशतवार्षिकी समारोह" का आयोजन साहित्य अकादमी और हिंदी विभाग -- बी आर अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में मुजफ्फरपुर में किया गया. व्याख्यानों के स्तर और श्रोताओं की उपस्थिति की दृष्टि से यह एक बहुत सफल आयोजन रहा. "गद्य-पद्य-समाभ्यस्त" आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री ने विविध विधाओं में लगभग पांच दर्जन कृतियां हिंदी को दी हैं, जिनमें 'राधा' जैसा महाकाव्य, 'कालिदास' जैसा उपन्यास 'साहित्य-दर्शन' जैसा आलोचना-ग्रन्थ और 'हंसबलाका' जैसा संस्मरण-ग्रन्थ शामिल हैं. शास्त्रीजी के विपुल और स्तरीय लेखन के अनुपात में उनका मूल्यांकन कम ही हुआ है. यह आयोजन शास्त्रीजी के साहित्यिक अवदान के मूल्यांकन के क्रम में एक महत्त्वपूर्ण घटना माना जा सकता है.

यह कार्यक्रम उद्घाटन-सत्र के अतिरिक्त चार सत्रों में संपन्न हुआ. उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की. अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. तिवारी ने कहा कि महान रचनकारों का लेखन किसी भी युग में प्रासंगिक होकर उभर सकता है. वह अपने समय की सीमाओं का अतिक्रमण करता है. शास्त्रीजी ऐसे ही महान रचनाकार थे, जिनकी कृतियाँ दीर्घकालीन प्रासंगिकता रखती हैं. उन्होंने शास्त्रीजी के विराट व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया की वे स्वाभिमानी और निर्भीक साहित्यस्रष्टा थे. उद्घाटन-भाषण

में प्रो. खगेन्द्र ठाकुर ने नलिनविलोचन शर्मा के उस कथन की याद दिलाई जिसमे उन्होंने कहा था कि बहुत सर खुजाने के बाद भी आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के बाद किसी पांचवें छायावादी कवि का नाम स्मरण नहीं आता. खगेन्द्र जी ने उन्हें ऐसा व्यक्तित्व बताया जिसने पूरे देश में मुजफ्फरपुर की शान को बढ़ाया. श्री मदन कश्यप ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए शास्त्रीजी के विशाल साहित्य-संसार की यात्रा श्रोता-समाज को करवाई. शास्त्रीजी ने गीतिकाव्य, महाकाव्य, गीतिनाट्य, गाथाकाव्य, संस्मरण, उपन्यास, कहानी, लघुकथा आदि अनेक विधाओं में रचना की थी. श्री मदन कश्यप ने लगभग सभी विधाओं की चर्चा करते हुए उनकी उपलब्धि और सीमाओं को चिह्नित किया. पाषाणी गीतिनाट्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उनके मौलिक प्रदेय को उनके रचनाकाल में नहीं पहचाना गया. 'साहित्य-दर्शन' के निबंधों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया की उन्होंने अपनी अनाविल आलोचना-दृष्टि का लोहा तब मनवाया जब हिंदी आलोचना में शुक्ल जी की तूती बोल रही थी. इस सत्र का सञ्चालन कुमार अनुपम ने किया.

प्रथम सत्र "हिंदी गीतिकाव्य और जानकीवल्लभ शास्त्री" की अध्यक्षता प्रो. राजेंद्र गौतम ने की. प्रो. गौतम ने स्पष्ट किया कि शास्त्रीजी ने छायावादी गीत को भारतीय परम्परा का गीत नहीं माना था. उन्होंने इस गीत की सीमाओं का अतिक्रमण करते उसे उस भारतीय परम्परा से जोड़ा जिसमे व्यक्तित्व की स्थापना के साथ वस्तुपरकता को भी स्थान मिला है. प्रो. गौतम ने उद्धरणों के माध्यम से स्पष्ट किया कि उनके गीतों में जितनी स्वानुभूति है, उतनी ही युगानुभूति भी. निराला से प्रभाव ग्रहण कर शास्त्रीजी की गीत-यात्रा उत्तरछायावाद में अपनी अलग पहचान बनाती हुई नवगीत तक जाती है. कथ्य और शिल्प की दृष्टि से यह काव्य एक नया मानक प्रस्तुत करता है. इस सत्र में प्रो. सतीश कुमार राय और प्रो.

पूनम सिन्हा ने अपने आलेख प्रस्तुत किये. प्रो. राय ने शास्त्रीजी की गीत-कृतियों का विस्तार से परिचय दिया जबकि प्रो. सिन्हा ने छायावादी गीत के अलोक में उनके गीतिकाव्य की व्याख्या की.

द्वितीय सत्र 'जानकीवल्लभ शास्त्री' का कथा-साहित्य एवं कथेतर साहित्य'' पर केन्द्रित था. इसकी अध्यक्षता प्रो. रेवतीरमण ने की. उन्होंने अपने भाषण में शास्त्रीजी के संस्मरण साहित्य की विस्तार से चर्चा की तथा डा. राजीवकुमार झा और डा. संजय पकज ने आलेख-पाठ किया. डा. संजय पकज ने शास्त्रीजी के कथा साहित्य में संवेदनशीलता को उसकी विशेषता बताया.

तृतीय सत्र "जानकीवल्लभ शास्त्री की प्रबंध-प्रतिभा और आलोचना-दृष्टि" की अध्यक्षता प्रो. प्रमोदकुमार सिंह ने की प्रो. देवीशंकर नवीन और प्रो. रवीन्द्र उपाध्याय ने आलेख-पाठ किया. प्रो. नवीन ने 'साहित्य-दर्शन' के निबंधों के आधार पर शास्त्रीजी को हिंदी में तुलनात्मक साहित्य का प्रणेता बतलाया और आलोचना-क्षेत्र में उनकी देन को रेखांकित किया. प्रो. रवीन्द्र उपाध्याय ने 'राधा' महाकाव्य का विश्लेषण प्रस्तुतु करते हुए शास्त्री जी की प्रबंध-प्रतिभा का महत्त्व प्रतिपादित किया. अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. प्रमोदकुमार सिंह ने 'राधा' के छंद-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला.

शास्त्रीजी की स्मृति को समर्पित चतुर्थ सत्र काव्य-पाठ का था. इसमें अरुण कमल, मदन कश्यप, राजेंद्र गौतम, शंभु बादल, विनय कुमार, पूनम सिंह और रश्मि रेखा ने प्रभावपूर्ण कविताओं के पाठ से श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध किया. साहित्य-अकादमी के संपादक कुमार अनुपम के द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ.